International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 83-85

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(3): 83-85
www.allresearchjournal.com
Received: 16-01-2016
Accepted: 18-02-2016

दीप्ति पाण्डेय
प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Correspondence
दीप्ति पाण्डेय
प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण: वैदिक से आधुनिक काल

दीप्ति पाण्डेय

वैदिक काल के दिनों आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की गति की प्रतिस्पर्धा में वांछित लक्ष्य का निर्धारण नहीं हुआ करता था। रहन-सहन तथा परिवेश के तौर-तरीके प्राकृतिक माहौल की रोशनी से अपनाए जाते थे। प्रकृति की हरितमा में सजीव प्राणियों को हर्षित, उत्प्रेरित और सुवासित होने का नित नूतन अनुभव होता था। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन करने की विद्वेष और वैमनष्यता की भावना नहीं थी। हर्ष व उल्लास का मुस्कुराता हुआ वातावरण था।

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही वृक्षों को पर्यावरण का संरक्षक माना गया है। वेद सूक्तियों के अनुसार वन-वृक्ष प्रथ्वी पर वर्षा लाते हैं, वे मिट्टी को बहने से बचाते हैं, सुखा एवं बाढ़ आने से रोकते हैं तथा दूषित वायु को अपने अन्दर खींचकर हमें प्राणवायु (ऑक्सीजन) देते हैं। यही कारण है कि वर्क्षों की पुरातन काल में देवरूप में पूजा होती थी (रस्तोगी, १९९५)। भारतीय वेदों में कदम्ब का वृक्ष भगवान् श्री कृष्ण का प्रतीक माना गया है। बेल में भगवान् शिव, नीम में शीतला माता (माँ दुर्गा), तुलसी में भगवान् विष्णु का प्रतिबिम्ब माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जिस व्यक्ति की मृत्यु बेल वृक्ष की छाँव में होती है, उसे काशी में हुई मृत्यु के बराबर माना जाता है। पीपल वृक्ष में त्रिदेव (ब्रम्हा, विष्णु एवं शिव) का वास माना गया है। जामुन का वृक्ष कार्तिकेय, केले का वृक्ष भगवान् विष्णु एवं देव गुरु ब्रहस्पति का प्रतीक माना जाता है। सिरस के वृक्ष को मनसा देवी को प्रसन्न करने के लिए प्रयोग किया जाता है। आम की लकड़ी को हवन-पूजन में चन्दन के सामान उच्च स्थान प्राप्त है। वेदों में यह स्पष्ट वर्णित है कि, वृक्ष वनों के स्वामी हैं। भगवत गीता में भी भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि, समस्त वृक्षों में मैं पीपल हूँ; जिससे इस वृक्ष के पौराणिक महत्व को बल मिलता है। पुराणों में सभी मनोकामनाओं की पूर्ती करने वाले कल्पवृक्ष का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद की प्रथ्वीसुक्ती में अनेक शक्तियों से सम्पन्न औषधियों, अन्न और फल देने वाले वृक्ष एवं वनस्पतियों का उल्लेख है जिनका संरक्षण तथा उचित प्रयोग मानव से सदैव अपेक्षित रहा है। वेद सूक्ति के अनुसार भूमि को किसी भी प्रकार की क्षति पहुंचाने को निषेध माना गया है तथा स्वाभाविक तरीके से की जाने वाली कृषि को प्राथमिकता डी गयी है।

वर्तमान में बाजारवाद की इस अंधी दौड़ में मनुष्य यह भूल गया है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक वह प्रकृति एवं पर्यावरण की गोद में ही रहता है। पर्यावरण के तीनों मण्डल सम्पूर्ण जीव जगत के लिए उपयोगी हैं। मानव जलमण्डल से जल, वायुमण्डल से प्राणवायु तथा स्थलमण्डल से भोजन प्राप्त करता है। ये तीनों मण्डल एक दुसरे के पूरक हैं। इनमे से एक में भी किसी भी प्रकार की कोई हानि, सभी मण्डलों को प्रभावित करती हैं जिसका दुष्परिणाम सम्पूर्ण जीव जगत को उठाना पड़ता है। आज मानव की अपेक्षाएं और आकांक्षाये

आर्थिक एवं औध्योगिक सम्पन्नता के सोपान नेम आरोहित होने लगी हैं। पारिष्थितिक संतुलन, प्राकृतिक एवं पर्यावरण के मूलभूत सिद्धांतों की उपेक्षा व अवहेलना कर विकासवादिता और औध्योगवादिता की अनियोजित परिधिमा विस्तृत की जाने लगी है। जिसके फलस्वरूप दिन-प्रतिदिन वातावरणीय प्रदुषण बढ़ता जा रहा है।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप लौह, इस्पात, रसायन, चमड़ा, कपड़ा, पेपरमिल, औषधि तथा रंग उद्योग एवं कोयला परिष्करण संयत्रों से निकलने वाले बहिस्रावों से जल प्रदुषण हो रहा है (रघुवंशी एवं चंद्रलेखा, १९८९)। इन बहिस्रावों के साथ आर्सेनिक, लेड, काडमियम, मरकरी, क्रोमियम जैसे विषैले तत्व जल में पहुंचकर उसे प्रदूषित कर देते हैं। यदि मनुष्य ऐसे जल का उपभोग करते हैं तो उन्हें पीलिया, आंत्रशोध, इत्याधि घातक रोग हो जाते हैं (डर, १९९५)। आज वायुमण्डल प्रदुषण के मुख्य स्रोत उद्योग में रासायनिक एवं ज्वलनशील पदार्थों का प्रयोग, मोटर गाड़ियों से उत्सर्जित कार्बन डाई-आक्साइड, कोयला आधारित ताप विधुत गृहों, परमाणु शक्ति उत्पादन गृहों के अपशिष्ट और नाभकीय विस्फोट हैं। प्रदूषित वायु से मानुष्य दमा, ब्रोंकाइटिस, स्नोफिलिया, कैंसर तथा क्षयरोग जैसी जानलेवा बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। स्थलमण्डल प्रदुषण मुख्यतः रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग, औद्योगीक बहिस्रावों, कोयला आधारित ताप विधुत गृहों से उत्सर्जित राख आदि से हो रहा है। कोयला आधारित ताप विधुत गृह एक ऐसा स्रोत हैं जो तीनों मण्डलों अर्थात, जल, वायु व थल को प्रदूषित कर रहे हैं। इनसे मुख्यतः हैवी-मेटल्स, उड़न-राख एवं कार्बन डाई-आक्साइड का उत्सर्जन वातावरण में होता है (पाण्डेय, २०१४)।

इस प्रकार अनेक प्रदुषण स्रोतों से आज हमारा पूरा वातावरण अत्यधिक प्रदूषित हो चुका है। इस कारण वातावरण के औसत तापमान में दुश्परिवार्तन हो रहे है जिनका प्रभाव पेंड़-पौधों के जीवन-चक्र पर पड़ रहा है (बाजपेयी इत्यादि, २०१५)। सभी ऋतुओं का नियमित समय पर आना पर्यावरण की शुद्धता का प्रतीक माना जाता है (रघुवंशी एवं चंद्रलेखा, १९८९)। संक्षेप में वेद पर्यावरण में किसी भी प्रकार के दूषण अर्थात प्रदूषण का विरोध करते हैं और हमें लगातार पर्यावरण के प्रति आदर भाव रखते हुए उसके सतत उपभोग पर जोर देते हैं, ताकि, अरबों वर्षों में बनी इस स्रष्टि को आने वाली सभी पीढ़ियाँ इसका आनंद उठा सकें (रघुवंशी एवं चंद्रलेखा, १९८९)।

बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदुषण को दूर करने हेतु आज एक ऐसी प्रौद्योगिकी (तकनीक) की आवश्यकता है जो सस्ती, सरल, टिकाऊ एवं अनुकरणीय हो, साथ ही साथ सतत विकास में सहयोगी भी हो। इस परिपेक्ष्य में वनस्पति आधारित "वनस्पति परिवेशोद्वार" तकनीक का वैश्विक स्तर पर स्वागत हुआ है। इसमें पौधों द्वारा प्रदूषित मृदा, जल एवं वायु में उपस्थित प्रदूषकों को अवशोषित कराया जाता है (पाण्डेय, २०१४)। इस प्रकार पेंड़-पौधे न केवल फल, छाया एवं आश्रय प्रदान करते हैं बल्कि उसके साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण के रोकथाम व नियंत्रण में भी योगदान करते हैं।

हमारे जीवन के लिए, पौधे स्वच्छ वातावरण व वायु प्रदान करते है, जिस कारन इन्हें प्रकृति के फेफड़े भी कहते हैं। ये वायु के वेग एवं दिशा को नियंत्रित करते हैं। औद्योगीकरण एवं मोटर-वाहनों द्वारा छोड़ी गयी कार्बन डाई-आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड आदि गैसें वतावरणीय तापमान को लगातार बढ़ा रही हैं। जब कि ५०-१०० मीटर हरित क्षेत्र शहरों में ३।५ ºC तक तापमान कम कर देता है। तुलसी, नीम, पीपल, अशोक, वट और अम्बर जैसे पेंड़ घरों, बगीचों एवं सड़क के किनारे पर उगाये जाने पर वहाँ के वातावरण को शुद्ध करते हैं।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों को पर्यावरण संरक्षण का वाहक माना गया है। एक वृक्ष को १०० पुत्रों के समान माना गया है। वृक्षों की महत्वता पर प्रकाश डालते हुए मत्स्य पुराण में बताया गया है कि, "दस कुओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियां एक तालाब के बराबर है, दस तालाब एक पुत्र के बराबर हैं और दस पुत्र एक वृक्ष के समान"। आधुनिक काल के शोध से यह ज्ञात हुआ है कि पीपल का वृक्ष सबसे अधिक आक्सीजन देता है; संभवतः इसी कारण इसकी पूजा वैदिक काल से होता आ रहा है।

इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण में पेंड़-पौधों का महत्व वैदिक काल से ही प्रमाणित होता है। किन्तु आज मानव वनों की लगातार अंधाधुंध कटाई करता जा रहा है जिससे पर्यावरण एवं जीवधारियों दोनों के अस्तित्व के लिए संकट खड़ा हो गया है। आज आवश्यकता है कि सरकार के "वन एवं विनयमों को कड़ाई से लागू करें, साथ ही साथ वनीकरण के फायदों की जानकारी भी जनसामान्य तक पहुंचाने की व्यवस्था करें जिससे वनों की इस अंधाधुंध कटाई पर अंकुश लगाया जा सके।

सन्दर्भ

1 रस्तोगी, उर्मिला (१९९५) वैदिक कालीन पर्यावरण नीति। पर्यावरण पत्रिका, अप्रैल अंक: ५१-५४।

2 रघुवंशी, ए। एवं चन्द्रलेखा (१९८९) पर्यावरण तथा प्रदुषण। मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, तृतीय संस्करण।

3 पाण्डेय, वी। सी। (२०१४) उड़नराख का पादप प्रबंधन। कोयला उपयोग: द्रष्टि-२०२५, एल। सी। राम, एन। के।

श्रीवास्तव, ए। के। सिन्हा, एस। के। झा, के। के। शर्मा एवं अमलेंदु सिन्हा (सम्पादक), १७८-१८६।

4 डर, ब। ब। (१९९५) पर्यावरण संरक्षण - भारतीय नीति। पर्यावरण पत्रिका, अप्रैल अंक: २४-२८।

5 बाजपेयी, ओ।, पाण्डेय, जे। एवं चौधरी एल। बी। (२०१५) पश्चिमी विक्षोभ के परिणाम स्वरुप हुई ठंड का हिमालय के तराई क्षेत्र की पेड़ प्रजातियों के पुष्पन पर प्रभाव। वर्तमान विज्ञान, १०९(१०): १७८१-१७८२।